भारतीय बहुसांस्कृतिक समाज

बहुसांस्कृतिक से तात्पर्य सांस्कृतिक विविधता अथवा सांस्कृतिक बहुलता से है । दूसरे शब्दों में एक ही साथ सभी संस्कृतियों का सम्मान करना तथा संवैधानिक रूप से उन्हें बराबर का स्थान देना बहुसांस्कृतिकता का आधार है । कोई भी देश तभी बहुसांस्कृतिक कहलाता है, जब वह अपने यहां उपस्थित लगभग सभी संस्कृतियों को समान महत्व देता है अर्थात् कोई भी एक संस्कृति किसी अन्य पर हावी न हो, और न ही उसके विशालकाय स्वरूप में तथाकथित छोटी संस्कृतियाँ लुप्त हो जाएँ ।

स्पष्ट तौर पर कहा जा सकता है कि बहुसांस्कृतिक राष्ट्र वह है जिसकी सीमा में सभी उपलब्ध संस्कृतियाँ अपने पूर्ण अस्तित्व के साथ बनी रहती हैं । समाज में सांस्कृतिक बहुलता एक ऐसे व्यवस्था की ओर ईशारा है जहां विभिन्न विश्वास, धर्म और भाषा आदि के लोग एक साथ रहते हैं ।

पिछले कुछ दशकों में यह बहुसांस्कृतिकता एक राजनीतिक विचार बन कर उभरी है, बहुसांस्कृतिकवाद कहा जाता है । **'व्हाट इज़ मल्टीकल्चरलिज्म'** नामक शीर्षक में **भीखू पारेख** ने बहुसांस्कृतिकवाद को एक दार्शनिक सम्प्रदाय या कार्यक्रमोन्मुख राजनीतिकसिद्धान्त मानने की वजाय मानव जीवन को देखने का

एक तरीका या नज़रिया बताया है । बहुसांस्कृतिकवाद कोई निर्विवाद विचार नहीं है । आज अगर राष्ट्र इसे राजकीय नीति के तौर पर स्वीकार करते हैं और अलग-अलग सांस्कृतिक पहचानों की विशिष्टता को मान्यता देते हैं, तो दूसरी ओर कई हल्कों में कई कोणों से इसका विरोध भी किया जाता है ।

भारतीय बहुसांस्कृतिकता

बहुसांस्कृतिकता के अन्तर्गत केवल 'संस्कृति' और 'सांस्कृतिक समूह' को ही मान्यता नही देनी चाहिये अपितु इस दायरे में धर्म, भाषा, वर्ण, राष्ट्रीयता और नस्ल से सम्बन्धित तथ्यों का भी महत्व है ।

भारत की सांस्कृतिक बहुलता कोई नवीन प्रक्रिया नहीं है । इसकी विशाल ऐतिहासिकता है । भारतीय संस्कृति अत्यन्त प्रचीन है और विभिन्न लोगों के बीच संवाद और सम्पर्क परिणाम है । इस प्रकार भारतीय संस्कृति ऐसी संस्कृति रही जिसने उन सभी तत्त्वों को आत्मसात करने का प्रयास किया जो इसके संपर्क में आये । इस आत्मसात करने की भारतीय परम्परा को हम हड़प्पा काल से देख रहें हैं ।

सिंधु सभ्यता के मृदभांडों और सील का मेसोपोटामिया शहरों में पाया जाना और सिंधु सभ्यता के लोथल से मिले पोतगाह स्थापित करते हैं कि हड़प्पावासियों के बाहरी लोगों से सम्पर्क थे । हड़प्पाई लोगों के धार्मिक विश्वासों के साक्ष्य भी हमें प्राप्त होंते हैं जिनसे पता चलता है कि प्रकृति-पूजा भी होती थी । एक हड़प्पाई सील में लोगों को पीपल वृक्ष के समक्ष खड़े हुए और पूजा करते हुए दिखाया गया है । यह परम्परा पीपल के वृक्ष की पूजा के रूप में आज भी जारी है ।

भारत अनेक भाषाओं और संस्कृतियों की भूमि है । यहां प्राचीनकाल से भाषिक और सांस्कृतिक जड़ों की विपुल धाराएं पाई जाती हैं । लोगों के खान-पान, वेशभूषा, धार्मिक व सांस्कृतिक मान्यताएँ, सामाजिक मानदण्ड और समाज द्वारा अपनी कही व प्रयोग की जाने वाली ये मान्यताएँ क्षेत्रीय सीमाओं के पार फैलते बहुविध सांस्कृतिक रिवाजों के अन्तर्गत आती हैं ।

भारतीय सन्दर्भ में बहुसांस्कृतिकता धार्मिक बहुलता तथा एक व्यापक सामाजिक-सांस्कृतिक इतिहास लेखन नामक दो भिन्न धाराओं से प्रतिबिम्बित होती है । मुख्य रूप से हिन्दु, मुसलमान, ईसाई, सिख, बौद्ध, जैन, पारसी जनसंख्याओं के साथ भारत विश्व में सर्वाधिक विविध धर्मी देश है ।